रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी समस्या : एक अध्ययन

राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

मानविकी संकाय

शोध निर्देशक :

डॉ० सुनीता यादव
अध्यक्ष सह एसोसिएट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी :

प्रतिभा बाड़ा
यू.जी.सी. नेट उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी समस्या : एक अध्ययन

प्रस्तावना

साहित्य समाज का आईना है। उसमें वर्तमान समय का यथार्थ चित्रित होता है। साहित्यकार एक सामाजिक प्राणी है। समाज में व्याप्त विविध समस्याओं और परिस्थितियों का अंकन करना उसकी जिम्मेदारी है।

वर्तमान हिन्दी कथा–साहित्य में भी अनेकों समस्याओं का निरूपण हुआ है। उनमें लम्बे समय से नारी के रूप, उसके संघर्ष व समस्या को दर्शाया गया है। एक ओर तो नारी को देवी का दर्जा दिया गया है, परन्तु दूसरी ओर वह मात्र भोग्या बनकर रह गयी है। नारी का संघर्ष उस माहौल के विरूद्ध है, जिसने उसकी खुशियों, आकांक्षाओं को दबाने का प्रयास किया है। वह सदियों से ही शोषित व उपेक्षित होती आ रही है। चाहे वह पारिवारिक स्तर हो या सामाजिक या अन्य स्तर हो।

हिन्दी कथा–साहित्य में कई लेखिकाएँ जैसे– मन्नू भंडारी, मालती जोशी, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा, चित्रा मुद्‌गल आदि की रचनाओं में नारी जीवन के अनुछुए पक्षों समस्याओं को उद्‌घाटित किया गया है।

नारी विमर्श के साहित्य की अन्य लेखिकाओं की तरह रमणिका गुप्ता ने भी नारी जीवन सम्बन्धी लेखन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनका जन्म 22 अप्रैल 1930 ई. को सुनाम, पंजाब में हुआ था। उन्होंने एम.ए., बी.एड. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। अनेक सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं से सम्बद्ध रमणिका जी तत्कालीन बिहार (वर्तमान झारखण्ड) की विधायक व विधान परिषद की सदस्य भी थीं।

26 मार्च 2019 ई. को नई दिल्ली में रमणिका जी का निधन हो गया।

रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी की समस्याओं का यथार्थ रूप देखने को मिलता है। रमणिका जी नारी जीवन की समस्या को गहराई से

समझने वाली एक संवेदनशील लेखिका थीं। नारी पर हो रहे अत्याचारों तथा शोषणों को देखे बेचैन हो उठती थीं। इन्हीं कारणों से उन्होंने साहित्य लेखन में नारी विमर्श पर काम किया। वे शोषित–पीड़ित नारियों की आवाज बनीं।

रमणिका जी ने नारी जीवन पर आधारित अपने कहानी संग्रह 'बहु–जुठाई' में नारी के प्रति समाज की विकृत मानसिकता और बर्बरता से जूझती नारी को चित्रित किया है। 'चमेली' कहानी की पात्र चमेली सामाजिक कुरीति की भेंट चढ़ पिता समान पुरूष के साथ विवाह कराकर बांध दी जाती है। उसका शारीरिक व मानसिक शोषण होता है। वहीं तीजमति को उसके पति ने अंधविश्वास के कारण डायन कह पीट–पीटकर मार डाला। 'बहु–जुठाई' कहानी में समाज के एक वर्ग विशेष द्वारा पीढ़ियों से नारी के शोषण की कथा है। 'चन्दा मर नहीं सकती' कहानी की नायिका चन्दा आर्थिक समस्या के कारण मुंशी उदय सिंह के शोषण का शिकार बनती है। 'परबतिया' कहानी की परबतिया का पारिवारिक समस्या के कारण बाल विवाह करा दिया जाता है। कुछ दिनों में ही वह परित्यक्ता का दंश झेलती है।

दूसरे कहानी संग्रह 'वह जियेगी अभी' में संकलित कहानियों में सदियों से किनारे पड़ी नारी की समस्या को उजागर किया गया है। धर्म, समाज, जाति, वर्ग और व्यवस्था के वर्चस्ववादी मकड़े के जाल में मक्खी की तरह उलझी और पिसती नारी की छटपटाहट को दर्शाया गया है।

लेखिका ने अपने उपन्यास का विषय उन महिलाओं पर केन्द्रित किया, जो अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करती है। 'सीता–मौसी' दो लघु उपन्यास है। 'सीता' उपन्यास में कामगर नारियों की पीड़ा, उनका संघर्ष तथा समाज में उनकी स्थिति का अंकन है। इस उपन्यास की नायिका सीता है, जो किसान से कामगार बन चुकी है। वह पितृसत्ता और धर्म का सामना डटकर करती है। वह परित्यक्ता है। पुनः दूसरे धर्म के व्यक्ति के साथ रहती है, पर यहाँ भी उसे धोखा ही मिलता है। अपने बच्चों को पालने के लिये खदान में

खटती है। वह वर्षों से पीड़ित व शोषित नारियों की आवाज बनती है। वहीं 'मौसी' उपन्यास की मुख्य पात्र मौसी है, जो बार–बार छली जाने वाली नारी की आकुल कर देने वाले जीवन संघर्ष को प्रस्तुत करती है।

रमणिका गुपता ने अपने कथा–साहित्य में नारी जीवन की वास्तविक समस्या को उजागर किया और नारी को मजबूती प्रदान करने का प्रयास किया।

शोध विषय की प्ररेणा और चयन :

मुझे महाविद्यालयीन विद्यार्थी जीवन से ही कहानी और उपन्यास के प्रति रूचि रही है। इसी दौरान मैंने रमणिका गुप्ता की 'सीता–मौसी' उपन्यास को पढ़ा और उससे प्रभावित हुई। इसके बाद मैंने उनकी अन्य रचनाओं को पढ़ा। मैंने एक नारी होने के नाते उन रचनाओं में वर्णित नारियों की पीड़ा, संघर्ष व समस्या का अनुभव किया।

आधुनिक सोच के खोखले दावों के बावजूद भी नारी की स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। वह आज भी समझौते और दोहरे कार्यभार के बीच पिस ही रही है। पितृसत्ता की जड़े हमारे समाज में गहराई तक जमी है। इसे तोड़ने में एक लम्बा अरसा लगेगा।

समाज में नारी की दोयम दर्जे की स्थिति को देखे मैं चिंतित हुई। अनेक महिला लेखिकाओं ने नारी के इस दोयम दर्जे को नकारा और मात्र उसकी अस्मिता को स्थापित करना चाहा। रमणिका गुप्ता की प्रत्येक रचना किसी न किसी समस्या की और संकेत करती है। रमणिका जी एक बोल्ड लेखिका के रूप में प्रसिद्ध रहीं। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में नारी जीवन मूल्यों और कर्तव्यों बोध द्वारा स्त्री–पुरूष व समाज के टूटते रिश्तों को जोड़ने का प्रयास किया है। इसी कारण मैं उनके कथा–साहित्य की ओर आकर्षित हुई। तत्पश्चात निश्चित किया कि रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य पर शोध कार्य करूँ। इस संदर्भ में मैं अपनी शोध निर्देशक डॉ. सुनीता यादव से मिली और विचार–विमर्श किया। उनके प्रेरणा एवं निर्देशन से मैंने– **रमणिका गुप्ता के**

कथा–साहित्य में नारी समस्या : एक अध्ययन विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

विषय का महत्व :

रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य पर नारी समस्या की दृष्टि से शोध कार्य हो यह समय की मांग है। इससे पूर्व प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है। नारी जीवन की समस्या पर रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य का मूल्यांकन आवश्यक है, क्योंकि नारीवादी साहित्य में पारम्परिक समीक्षा के मापदण्ड को नकारा जाता है, जिसका साहित्यिक क्षेत्र में विशेष महत्व है। प्रस्तुत शोध कार्य शोधार्थी तथा समाज हेतु उपयोगी होगा, यही इसकी महत्ता है।

नारी की समस्याओं, उसकी अस्मिता व नारी जागृति को अत्यन्त गहनता से व्यक्त करना ही इस शोध कार्य की सफलता होगी। रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में व्यक्त सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक दशा का गहराई से अध्ययन कर नारी की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत करना, एक श्रेष्ठ व सफल कार्य होगा।

परिकल्पना :

शोध परिकल्पना एक स्पष्ट परीक्षण योग्य कथन प्रदान करती है, जो शोध कार्य की दिशा और उस पर ध्यान केन्द्रित करने का मार्गदर्शन करती है।

शोध के विषय का चयन कर लेने के बाद शोधार्थी के मन में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ उठने वाली शोध विषय से सम्बन्धित पूर्व विचार और कल्पनायें शोध परिकल्पना कहलाती है।

परिकल्पना एक शोध समस्या का प्रस्तावित उत्तर होता है। परिकल्पना किसी भी शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण स्तंभ है।

रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी समस्या : एक अध्ययन शीर्षक को लेकर मेरे मन में चेतना जगी, इसे मैं सरलता व सुबोधता के साथ शोध

द्वारा प्रस्तुत करना चाहती हूँ। रमणिका गुप्ता के उपन्यास द्वारा नारी जीवन की स्थिति को अच्छी तरह से समझने के बाद, मैंने उनकी अन्य रचनाओं को पढ़ा और निश्चित किया कि मैं रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य को अपने शोध का विषय बनाउँगी। मैं सफल प्रयास करूँगी, उनके कथा साहित्य में निहित नारी समस्याओं को नये दृष्टिकोण एवं वास्तविकता के साथ प्रकाशित करूँ। जिससे की नारी वर्ग में शोषण तथा अत्याचारी शक्तियों से लड़कर आत्मविश्वास, आत्मनिर्णय एवं आत्मनिर्भरता की भावना जगेगी। जो नारी समाज और नई पीढ़ी के दिशा निर्देश में सफल सिद्ध होगी।

शोध का उद्देश्य :

1. रमणिका गुप्ता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानना।
2. नारी की अवधारणा और पृष्ठभूमि को समझना।
3. रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी जीवन की समस्या के विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन करना।
4. रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी पात्रों की व्यथा को जानना व समझना।
5. नारी वर्ग में रूढ़ियों के विरूद्ध चेतना का विकास करना।
6. समाज में लैंगिक असमानता को दूर करना एवं समाज में नारी के प्रति समानता व सम्मान की भावना जगाना।

पूर्वानुसंधान :

शोध कार्य के लिए कथा–साहित्य में मेरे द्वारा चयनित विषय **रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी समस्याः एक अध्ययन** पर अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। जिस भी विश्वविद्यालय में रमणिका गुप्ता पर शोध कार्य एवं लघु शोध कार्य हुए हैं, वे मेरे शोध कार्य के विषय से अत्यन्त अलग हैं। इन शोध विषयों की सूची निम्नाकित है–

1. दलित आदिवासी विमर्श और रमणिका गुप्ता, रंजना भारती, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, 2015
2. रमणिका गुप्ता का साहित्यः एक अनुशीलन, सविता तायडे, श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, 2016
3. सामाजिक यथार्थ के आइने में रमणिका गुप्ता का साहित्य, रीता चौधरी, कलकत्ता विश्वविद्यालय, 2021
4. रमणिका गुप्ता के साहित्य अस्मितामूलक विमर्श का अध्ययन, ज़रीना दीवान, जामिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, 2021
5. रमणिका गुप्ता के चिन्तन में आदिवासी जीवन, सरोजनी गौतम, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, 2021
6. रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में आदिवासी एवं स्त्री विमर्शः एक विवेचना, सुनीता कुमारी, राँची विश्वविद्यालय, राँची, 2022

शोध की प्रासंगिकता :

साहित्यकार रमणिका गुप्ता के कथा साहित्य में नारी जीवन समस्याओं पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। उनके साहित्य में नारी की पीड़ा एवं कठिनाईयाँ उजागर किए गए हैं। उनके कथा–साहित्य में नारी पात्र व्यथा व दुःख दर्द को धारण किए, मुक्ति का प्रयास करती दिखाई देती है। इस प्रकार मेरे शोध कार्य के विषय की प्रासंगिकता अत्यधिक बढ़ जाती है।

शोध प्रविधि :

मेरे शोध कार्य में निम्न विधियों का प्रयोग किया जाएगा :–

- वर्णनात्मक विधि
- आलोचनात्मक विधि
- विश्लेषणात्मक विधि

इनके अतिरिक्त विभिन्न पुस्तकालयों में पुस्तकों का अध्ययन किया जायेगा एवं निम्नांकित सामाग्रियों या उपकरणों का उपयोग शोध कार्य के लिए किया जाएगा :–

मौलिक एवं सहायक ग्रंथ

पत्र–पत्रिकाएँ

लेख–आलेख

कम्प्यूटर

इन्टरनेट

मोबाइल आदि।

भविष्य में शोध कार्य :

हमारा सोच, विचार व गहन चिंतन ही एक नये शोध कार्य को अंकुरित करता है। रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य को लेकर कई कार्य किए जा रहे हैं और भविष्य में भी कई महत्वपूर्ण कार्य किए जाएँगे। जो तत्कालीन समाज में उनके विचारों को प्रासंगिकता प्रदान करेंगे। रमणिका जी के कथा–साहित्य नारी जीवन की स्थितियों व समस्याओं को दर्शाते हुए, नारी–नर के सम्बन्धों में समानता स्थापित करने का प्रयास करती है। समाज को दोनों की ही आवश्यकता है। वे एक–दूसरे के पूरक है, इनसे ही भावी युग का निर्माण होगा। नारी की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समता, सम्मान व कार्य के अवसर देने के परिणामस्वरूप, उसका उत्तरोत्तर उत्थान होगा। यही इस शोध कार्य की उपलब्धि होगी और भविष्य में इस विषय पर शोध कार्य होते ही रहेंगे।

विषय व्याप्ति और सीमा :

किसी भी कार्य को सुचारू रूप से पूरा करने के लिए एक निश्चित सीमा और सुनियोजित कार्य व्यवस्था का होना अत्यन्त जरूरी है। इसी वजह से मैंने नारी जीवन की समस्या को केन्द्र में रखकर रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य तक सीमित रखा है। मैं निश्चित समयावधि के भीतर शोध कार्य को पूर्ण करने का प्रयास करूँगी।

शोध कार्य का प्रारूप

संभावित अध्यायीकरण

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय : रमणिका गुप्ता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 रमणिका गुप्ता का जीवन परिचय

- 1.1.1 जन्म
- 1.1.2 शिक्षा
- 1.1.3 पारिवारिक परिवेश
- 1.1.4 दाम्पत्य जीवन
- 1.1.5 अभिरूचि

1.2 रमणिका गुप्ता का कृतित्व

- 1.2.1 कविता
- 1.2.2 कहानी
- 1.2.3 उपन्यास
- 1.2.4 आत्मकथा
- 1.2.5 सम्पादन : 'युद्धरत आम आदमी'
- 1.2.6 कथेतर साहित्य
- 1.2.7 पुरस्कार एवं सम्मान

द्वितीय अध्याय : समकालीन महिला लेखिकाओं का परिचय

2.1 शिवानी

2.2 मन्नू भण्डारी

2.3 कृष्णा सोबती

2.4 शशिप्रभा शास्त्री

2.5 मालती जोशी

2.6 प्रभा खेतान

2.7 मृदुला गर्ग

2.8 मैत्रेयी पुष्पा

2.9 ममता कालिया

2.10 उषा प्रियंवदा

2.11 चित्रा मुद्गल

तृतीय अध्याय : रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी की पारिवारिक और सामाजिक समस्या

3.1 कहानियों में नारी की पारिवारिक समस्या

3.1.1 पारिवारिक अत्याचार

3.1.2 यौन शोषण

3.1.3 दोहरा कार्यभार

3.1.4 नशाखोरी

3.2 कहानियों में नारी की सामाजिक समस्या

3.2.1 लैंगिक भेदभाव

3.2.2 जातिगत भेदभाव

3.2.3 अनमेल विवाह

3.2.4 बाल विवाह

3.2.5 सामाजिक बहिष्करण

3.2.6 अशिक्षा

3.2.7 नारी विक्रय समस्या

3.3 उपन्यास में नारी की पारिवारिक समस्या

3.3.1 पारिवारिक विघटन

3.3.2 अनैतिक सम्बन्ध

3.3.3 संतान के पालन–पोषण की समस्या

3.3.4 नारी द्वारा नारी का शोषण

3.3.5 संतानहीन नारी समस्या

3.3.6 अकेलेपन की समस्या

3.3.7 रखैल नारी की समस्या

3.4 उपन्यास में नारी की सामाजिक समस्या

3.4.1 अस्पृश्यता

3.4.2 अन्तरजातीय विवाह

3.4.3 बहुविवाह

3.4.4 परित्यक्ता नारी

चतुर्थ अध्याय : रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में नारी की धार्मिक और आर्थिक समस्या

4.1 कहानियों में नारी की धार्मिक समस्या

4.1.1 अंधविश्वास

4.1.2 भाग्यवाद

4.2 कहानियों में नारी की आर्थिक समस्या

4.2.1 गरीबी

4.2.2 बेरोजगारी

4.2.3 श्रम शोषण

4.2.4 कर्ज की समस्या

4.3 उपन्यास में नारी की धार्मिक समस्या

4.3.1 धार्मिक आसमानता

4.3.2 धार्मिक रूढ़िवादिता

4.3.3 घृणा एवं द्वेष का फैलाव

4.4 उपन्यास में नारी की आर्थिक समास्या

4.4.1 पलायन

4.4.2 बुनियादी सुविधा का अभाव

4.4.3 आजीविका की समास्या

4.4.4 श्रम अधिकार का हनन

4.4.5 कार्यस्थल पर भ्रष्टाचार

पंचम अध्याय : रमणिका गुप्ता का नारी विषयक दृष्टिकोण

5.1 नारी का अस्तित्व

5.2 रूढ़िवादी धारणा में कैद नारी

5.3 लैंगिक भेदभाव का विरोध

5.4 नारी का कानूनी अधिकार

5.5 नारी मुक्ति की आकांक्षा

पष्ठम अध्याय : रमणिका गुप्ता का कथा–साहित्यः भाषा शैली एवं शिल्प

6.1 भाषा शैली

6.2 शिल्पगत वैशिष्ट्य

उपसंहार

परिशिष्टः

1. आधार ग्रंथ
2. सहायक ग्रंथ
3. पत्र–पत्रिका
4. लेख–आलेख
5. वेबसाइट

नोट : भविष्य में आवश्यकता होने पर विषय सूची में आंशिक परिवर्तन किये जा सकता हैं।

शोध निर्देशक

डॉ. सुनीता यादव
अध्यक्ष सह एसोसिएट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

प्रतिभा बाड़ा
यू.जी.सी. नेट उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

संदर्भ ग्रंथ सूची

(क) आधार ग्रंथ :

1. गुप्ता, रमणिका, 'बहु–जुठाई', शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2010
2. गुप्ता, रमणिका, 'वह जियेगी अभी', वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2018
3. गुप्ता, रमणिका, 'सीता–मौसी', ज्योतिलोक प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2019
4. गुप्ता, रमणिका, 'हादसे', राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पाँचवा संस्करण, 2023
5. गुप्ता, रमणिका, 'आपहुदरी', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022
6. गुप्ता, रमणिका, 'स्त्री मुक्तिः संघर्ष और इतिहास', सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022
7. गुप्ता, रमणिका, 'स्त्री विमर्शः कलम और कुदाल के बहाने', शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2015
8. गुप्ता, रमणिका, 'मेरे साक्षात्कार', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

(ख) सहायक ग्रंथ :

1. बउवार, सीमोन द, 'स्त्री उपेक्षिता', अनु.प्रभा खेतान, हिन्दी पाकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2002
2. खेतान, प्रभा, 'उपनिवेश में स्त्री' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
3. वर्मा, महादेवी, 'श्रंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पंचम संस्करण, 2019
4. देसाई, नीरा, 'भारतीय समाज में नारी', मैकमिलन इंडिया लि. दिल्ली, 1982

5. डॉ. राजकुमार, 'नारी शोषणः समस्याएँ एवं समाधान', अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2017
6. बिम्ब्रॉ, डॉ. सीता, 'नारी समस्या और समाधान', नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017
7. मालती, डॉ. के.एम. 'स्त्री विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017
8. सिंह, डॉ. सुमन, 'हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता के विविध रूप', मनीष प्रकाशन, वाराणसी, 2016
9. शर्मा, मनीष एवं राठी, डॉ. सुधीर, 'नारी अस्मिताः संघर्ष और यथार्थ', अरावली प्रकाशन, जयपुर, 2021
10. प्रकाश, डॉ. अलका, 'नारी चेतना के आयाम', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013
11. छिल्लर, डॉ. मंजुलता, 'भारतीय नारी शोषण के बदलते आयाम', जी.बी. बुक्स, दिल्ली, 2017
12. पी.,प्रमीला के., 'स्त्री चिन्तन', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022
13. शर्मा, डॉ० ओमप्रकाश, समकालीन महिला लेखन, पूजा प्रकाशन, दिल्ली 2002
14. डॉ० ज्योति, महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में नारीवादी दृष्टि अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
15. पांडे, डॉ० इन्दु प्रकाश, हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2004
16. सिंह, पुष्पपाल, 21वीं सदी का हिन्दी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2015
17. जाखड़, डॉ० कृष्णा, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

18. कांबले, डॉ० संतोष एवं शर्मा, पूनम, हिन्दी साहित्य में नारी, नोशन प्रेस, चेन्नई, 2022

19. महिड़ा, डॉ० देव्यानी, हिन्दी महिला उपन्यासकार : नारी विमर्श, रूद्र पब्लिर्शस एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2019

पत्र–पत्रिकाएँ

1. युद्धरत आम आदमी
2. हंस
3. वागार्थ
4. आजकल

वेबसाइट

इसमें ई–दस्तावेज, डेटा, एप्लिकेशन, ई–सेवाएँ आदि शामिल हैं।

नोट : उपर्युक्त तथ्य प्रथम एवं अंतिम नहीं है।